Kishori Sinha Mahila College
(A Constituent Unit of Magadh University)
Aurangabad, Bihar - 824101

For

B.A (Part I)

भारतीय समाज में महिलाओं की प्रस्थिति

Status of Women in Indian Society

Dr Amit Rahul

Department of Sociology

KSMC, Aurangabad

भारत में महिलाओं की स्थिति : कल, आज और कल

महिलाओं की स्थिति

- महिलायें किसी भी समाज का स्तम्भ है। भारत में महिलाओं की स्थिति ने पिछली कुछ सदियों में कई बड़े बदलावों का सामना किया है।

- भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत में महिलाएं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोक सभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं।

- भारत में महिलाओं की स्थिति हर युग में एक समान नहीं रही हैं | कभी नारी बेचारी बना दी गई तो कभी पुरुषों का अन्याय सहना ही उसका भाग्य बन गया | लेकिन जब भी भारतीय नारी को मौका दिया गया उसने यह बता दिया कि नारी न हारी है और न ही बेचारी है |

- कहा जाता है कि वैदिक युग में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त थे। उन्हें यज्ञों में सम्मिलित होने, वेदों का पाठ करने तथा शिक्षा हासिल करने की आजादी थी। ऋग्वेद और उपनिषद गार्गी, अपाला, घोषा, मैत्रेयी जैसी कई महिला विदुषियों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

- स्मृतियों नें स्त्रियों पर पाबंदियां लगाना शुरु किया। यहीं से महिलाओं की स्थिति में गिरावट आना शुरु हो गई।

- भारत पर ईस्लामी आक्रमण के बाद तो हालात बद से बदतर हो गये। इसी समय पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह, सती- प्रथा, जौहर और देवदासी जैसी घृणित धार्मिक रूढ़ियां प्रचलन में आईं।

❖ मध्ययुग में भक्ति आंदोलन ने महिलाओं की स्थिति को सुधारने का प्रयास जरूर किया, पर वे उस हद तक सफल नहीं रहे। सिर्फ चुनिंदा स्त्रियां, जैसे कि - मीराबाई, अक्का महादेवी, रामी जानाबाई और लालदेद ही इस आंदोलन का सफल हिस्सा बन सकीं।

❖ इसके तुरंत बाद सिख- धर्म प्रादुर्भाव में आया। इसनें भी युध्द, नेतृत्व एवं धार्मिक प्रबंध समितियों में महिलाओं एवं पुरुषों की बराबरी के उपदेश दिये।

❖ अंग्रेजी शासन ने अपनी तरफ से महिलों की स्थिति को सुधारने के कोई विशेष प्रयास नही किये, लेकिन 19 वीं शताब्दी के मध्य में उपजे अनेक धार्मिक सुधारवादी आंदोलनों जैसे ब्रह्म समाज (राजा राम मोहन राय), आर्य समाज (स्वामी दयानंद सरस्वती), थियोसोफिकल सोसाइटी, रामकृष्ण मिशन (स्वामी विवेकानंद), ईश्वरचंद्र विद्यासागर (स्त्री-शिक्षा), महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले(दलित स्त्रियों की शिक्षा) आदि ने अंग्रेजी सरकार की सहायता से महिलाओं के हित में सती प्रथा का उन्मूलन, 1829 (लार्ड विलियम बेंटिक) सहित कई कानूनी प्रावधान पास करवाने में सफलता हासिल की।

❖ आज़ादी के बाद केंद्र एवं राज्य सरकारों ने महिलाओं का आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्तिकरण करने हेतु कई कदम उठाये। आजाद भारत में महिलाएं दिन-प्रतिदिन अपनी लगन, मेहनत एवं सराहनीय कार्यों द्वारा राष्ट्रीय पटल पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब हुई हैं।

- पिछले कुछ दशकों में रक्षा और प्रशासन सहित लगभग सभी सरकारी तथा गैर-सरकारी क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी, उनकी स्वायत्तता तथा अधिकारों का कानूनी एवं राजनैतिक संरक्षण, तेजी से बदलते सकारात्मक सामाजिक नज़रिये, सुधरते शैक्षणिक स्तर, अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं में उनकी प्रतिभागिता एवं कौशल तथा सिनेमा, रचनात्मकता, व्यापार, संचार, विज्ञान तथा तकनीकि जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में कई बड़े बदलाव भी देखने में सामने आये हैं।

- शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए केंद्र सरकार द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना चलाई जा रही है।

- लेकिन आज आजादी के 70 सालों बाद भी भारत में महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नही कही जा सकती। आधुनिकता के विस्तार के साथ-साथ देश में दिन- प्रतिदिन बढ़ते महिलाओं के प्रति अपराधों की संख्या के आंकड़े चौकाने वाले हैं।

- उन्हें आज भी कई प्रकार के धार्मिक रीति-रिवाजों, कुत्सित रूढ़ियों, यौन अपराधों, लैंगिक भेदभावों, घरेलू हिंसा, निम्नस्तरीय जीवनशैली, अशिक्षा, कुपोषण, दहेज उत्पीड़न, कन्या भ्रूणहत्या, सामाजिक असुरक्षा, तथा उपेक्षा का शिकार होना पड़ रहा है।

- हमारे आस पास महिलायें ,सहृदय बेटियां, संवेदनशील माताएं, सक्षम सहयोगी और अन्य कई भूमिकाओं को बड़ी कुशलता व सौम्यता से निभा रहीं है। लेकिन आज भी दुनिया के कई हिस्सों में समाज उनकी भूमिका को नजरअंदाज करता है। इसके चलते महिलाओं को बड़े पैमाने पर

असमानता, उत्पीड़न, वित्तीय निर्भरता और अन्य सामाजिक बुराइयों का खामियाजा सहन करना पड़ता है। सदियों से ये बंधन महिलाओं को पेशेवर व व्यक्तिगत ऊंचाइयों को प्राप्त करने से अवरुद्ध करते रहे हैं।

❖ समाजिक संबलता हेतु बदलते भारत में महिलाओं की साक्षरता दर लगातार बढ़ती जा रही है, परंतु पुरूष साक्षरता दर से अब भी कम ही है। लड़कों की तुलना में बहुत कम लड़कियां ही स्कूल में दाखिला लेती हैं और उनमें से कई बीच से ही अपनी पढ़ाई छोड़ देती हैं। दूसरी तरफ शहरी भारत में यह आंकड़ा संतोषजनक है।

❖ लड़कियां शिक्षा के मामले में लड़कों के लगभग बराबर चल रही हैं। एक सबल राष्ट्र बनाने के लिए महिलाओं की शिक्षा एवं उनकी सक्रिय भागीदारी अति आवश्यक है, इसलिए हम सबको महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

❖ महिलाओं के बेहतरीकरण के लिए हम सबको अपनी कुत्सित एवं रूढ़िवादी मानसिकता से बाहर निकलना होगा। उन्हें सम्मान के साथ-साथ शिक्षा, व्यवसाय, नौकरी व अन्य सभी स्थानों पर बराबरी देना होगा। गौरतलब है कि भारतीय महिलाओं ने राष्ट्र की प्रगति में अपना अधिकाधिक योगदान देकर राष्ट्र को शिखर पर पहुंचाने हेतु सदैव तत्पर रही हैं।

❖ जब तक समाज के प्रत्येक वर्ग में महिलाओं की पुरुषों के बराबर भागीदारी सुनिश्चित नहीं हो जाती, वे हर प्रकार से शिक्षित, सुरक्षित तथा संरक्षित नही हो जातीं, तब तक हमारी आजादी अधूरी मानी जायेगी।

- स्त्री- सुरक्षा और समता में उठाया गया हमारा प्रत्येक कदम किसी न किसी हद तक स्त्रियों की दशा सुधारनें में कारगर साबित हो रहा है, इसमें कोई दो राय नहीं, किंतु सामाजिक सुधार की गति इतनी धीमी है कि इसके यथोचित परिणाम स्पष्ट रूप से सामने नहीं आ पाते।

- शिक्षा सभी दोषों से छुटकारा दिलाने का आधारभूत साधन है। एक शिक्षित स्त्री न केवल अपना बल्कि परिवार की परिवार की तीन पीढ़ियों का सर्वतोभद्र कल्याण कर सकती है। इसलिए शिक्षा को केन्द्र बनाकर तथा समुचित साधन और कानूनों का पालन सुनिश्चित करके देश को महिला अपराध मुक्त बनाया जा सकता है।

- युगनायक एवं राष्ट्र निर्माता स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था - " जो जाति नारियों का सम्मान करना नहीं जानती, वह न तो अतीत में उन्नति कर सकी, न आगे उन्नति कर सकेगी।" हमें भारतीय सनातन संस्कृति के "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" धारणा को साकार करते हुए महिलाओं को आगे बढ़नें में सदैव सहयोग करना चाहिए।

Thank You!